वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 95
ISBN-978-93-82071-98-3

पंचमेरु विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैनशासन के नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि
काकंदी (उ.प्र.) में भगवान के जन्मकल्याणक महोत्सव-
मगसिर शु. एकम् (3 दिसम्बर 2013) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

चतुर्थ संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
2200 प्रतियाँ	मगसिर शु. एकम्, 3 दिसम्बर 2013	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण (1988)-1100 प्रतियाँ, द्वितीय संस्करण (2006)-1100 प्रतियाँ, तृतीय संस्करण (2008)-1100 प्रतियाँ

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

पीठाधीश की कलम से.....

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्‌भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किये हैं। विशेषरूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य अर्थात् पूजा-विधान से जन-जन को अमोघ शस्त्र के रूप में भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य को सतत प्रकाशित करने के लिए पूज्य माताजी की ही पुण्य प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की भी स्थापना की गई, तब से लगातार इस ग्रंथमाला द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। जहाँ इस ग्रंथमाला ने लाखों श्रावकों एवं श्रद्धालु भक्तों को ज्ञान का लाभ प्रदान किया है, वहीं विशिष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के माध्यम से इस ग्रंथमाला को भी समाज के मध्य एक विशिष्ट ख्याति प्राप्त हुई है।

इस ग्रंथमाला से जहाँ पूज्य माताजी द्वारा टीकाकृत षट्‌खण्डागम जैसे महान सिद्धान्त ग्रंथों तथा नियमसार, समयसार, गोम्मटसार, अष्टसहस्री, कातंत्र व्याकरण आदि जैसे मूल आगम ग्रंथों का प्रकाशन होता है, वहीं मुख्यतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित विभिन्न बड़े-छोटे पूजा-मण्डल विधान आदि का प्रकाशन भी समाज के लिए विशेष मांग हेतु बना रहता है। आज हम इस ग्रंथमाला को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं, जिसके माध्यम से प्रकाशित हो रहे सत् साहित्य की वर्ष भर पूरे 365 दिन भारत के कहीं न कहीं, किसी न किसी मंदिर में मण्डल विधान या साहित्य वितरण आदि के लिए मांग आती रहती है और जैनधर्म व भक्तिमार्ग की प्रभावना में यह ग्रंथमाला नित्य ही तत्पर रहती है।

विशेषरूप से इस ग्रंथमाला द्वारा समाज को लागत मूल्य से भी कम राशि पर साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि सुविधापूर्वक जन-जन तक साहित्य पहुँच सके। आगे भी इसी प्रकार यह ग्रंथमाला अपना दायित्व निभाती रहे, यही भावना है। वर्तमान में प्रकाशित हो रही इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी श्रावकजन विशेष धर्मलाभ को प्राप्त करें तथा जैनधर्म का यह ज्ञान आपके सम्यक्त्व को दृढ़ करने में सदा सहकारी बनकर मोक्षमार्ग को प्रशस्त करे, सभी भक्तों को मेरी यही शुभकामनाएं एवं मंगल आशीर्वाद है।

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

आद्य वक्तव्य

-आर्यिका चन्दनामती

इस शताब्दी में जैन जगत् की महान साध्वी परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने साधु जीवन में विपुल साहित्य का निर्माण किया है जिनके द्वारा बड़े से बड़े विद्वान् और छोटे से छोटे अल्पज्ञानी भी सहज ही लाभ प्राप्त करते हैं। क्योंकि जहाँ अष्टसहस्री, नियमसार, समयसार, कातंत्रव्याकरण आदि क्लिष्ट संस्कृत ग्रंथों की हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं में टीकाएँ लिखी हैं वहीं युवा-पीढ़ी और बालकों के हित को ध्यान में रखते हुए जैन पुराणों पर उपन्यास एवं प्राथमिक शिक्षा के साधन 'बाल विकास' जैसी पुस्तकों की भी रचना की है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने प्रारंभ से लेकर आज तक जो भी कार्य किये, वह इस सदी के लिए अपने आप में नूतन एवं अनोखे रहे। आप दृष्टि डालें उनके जीवन के प्रारंभिक चरण पर। सन् 1934 में पिता छोटेलाल और माता मोहिनी की गोद में जन्म लेने वाली कन्या मैना ने 17 वर्ष पूर्ण करके सन् 1952 में जब त्याग मार्ग की ओर कदम बढ़ाया, तब जैन समाज के लिए यह एक आश्चर्यजनक घटना थी क्योंकि उससे पहले किसी कुमारी कन्या ने ऐसा साहस ही नहीं किया था। जब से मैना ने संघर्ष झेलकर अपना मार्ग प्रशस्त किया, तब से कुमारी कन्याओं का तांता लग गया और आज तो सैकड़ों कुमारियाँ ज्ञानमती माताजी के पथ पर अग्रसर हो रही हैं।

इसी प्रकार सन् 1965 में श्रवणबेलगोला स्थित भगवान् बाहुबली के चरण सानिध्य में उन्होंने साहित्य निर्माण हेतु अपनी लेखनी का शुभारंभ किया उससे पूर्व भगवान महावीर के शासनकाल में किसी भी आर्यिका या श्राविका ने कोई साहित्य रचना नहीं की थी। उस लेखनी के पश्चात् कई आर्यिकाओं ने साहित्य का सृजन प्रारंभ कर दिया। आगमवर्णित जम्बूद्वीप रचना की ओर कभी किसी का ध्यान नहीं गया था उसे पूज्य माताजी ने साक्षात् पृथ्वी पर दिखा दिया। जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति का प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी द्वारा सम्पूर्ण भारत में प्रवर्तन इन्हीं त्यागमूर्ति के आशीर्वाद से संभव हुआ। नारी जाति का

इतिहास इस महाविभूति से हजारों वर्ष तक गौरवान्वित रहेगा।

अपनी साहित्यिक कृतियों में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने पूजन विधान के क्षेत्र में अद्वितीय प्रतिभा का दिग्दर्शन कराया है। सन् 1976 में रचे गये इन्द्रध्वज विधान ने सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में नया अलख जगाया है। उसके पश्चात् तो आचार्यों द्वारा वर्णित चारों प्रकार की पूजाओं की रचना का मानो कोई संकल्प ही ले लिया हो क्योंकि नित्यमह पूजाओं में नवदेवता, सिद्ध आदि पूजाओं के साथ इन्द्रध्वज विधान और उसके पश्चात् कल्पद्रुम मण्डल विधान ने भी आधुनिक चक्रवर्तियों के अस्तित्व को बतलाया है एवं चौथा सर्वतोभद्र विधान भी भक्ति संगीत रसिकों के हाथों में पहुँच चुका है।

विधानों की शृँखला में यह पंचमेरु विधान आपके समक्ष है। भादों के महिने में सुदी पंचमी से लेकर नवमी तक पंचमेरु व्रत किया जाता है। इसे पुष्पांजलि व्रत भी कहते हैं। इस व्रत के उद्यापन में यह विधान करना चाहिए। हरिवंशपुराण में ''मेरुपंक्ति'' व्रत का वर्णन आता है उस व्रत के उद्यापन में भी यह पंचमेरु विधान करना चाहिए अथवा भक्ति और रुचि के अनुसार कभी भी इस विधान को किया जा सकता है कोई बाधा नहीं है।

इस मण्डल विधान में अनेक सुन्दर छंदों का प्रयोग पूज्य माताजी ने किया है जिन्हें संगीत की मधुर लहरी में पढ़ने से सारा शहर गुंजायमान हो जाता है। माताजी द्वारा रचित विधानों में लोगों को विशेष आनंद इसीलिए आता है कि उनकी पूजाएँ इतनी सरस, सरल एवं मधुर हैं कि क्रियाकाण्ड, पूजापाठ आदि से दूर रहने वाले नास्तिकवादी भी बड़ी रुचि से मंदिर जी में आकर भक्तिरस का लाभ उठाते हैं।

जिस प्रकार से इन्द्रध्वज आदि विधानों ने सारे भारतवर्ष में अपनी छवि फैलाई है उसी प्रकार से यह पंचमेरु विधान भी सभी भव्यों के लिए सुखकारी हो, ऐसी मंगल कामना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रोहतक, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

पंचमेरु विधान

– दोहा –

त्रिभुवनपति सन्मति सकल, विश्ववंद्य भगवान्।
जिनके वंदन से मिले, ऋद्धि सिद्धि सुखखान।।1।।

प्रथम सु जंबूद्वीप में, मेरु सुदर्शन नाम।
पूर्व धातकीखंड में, विजय मेरु सुखधाम।।2।।

अपरधातकीद्वीप में, अचल मेरु अचलेश।
पुष्करार्ध वर पूर्व में, मंदर मेरु नगेश।।3।।

पश्चिम पुष्कर अर्ध में, विद्युन्माली मेरु।
ढाई द्वीप विषे कहे, पावन पांचों मेरु।।4।।

सोलह सोलह जिनभवन, एक एक में जान।
पंचमेरु के ये सभी अस्सी जिनगृह मान।।5।।

भद्रसाल नंदन तथा वन सौमनस सुरम्य।
चौथा पांडुकवन कहा चारों वन अतिरम्य।।6।।

प्रतिवन के चारों दिशी, चार चार जिनगेह।
प्रतिजिनगृह एकांतरा से उपवास करेय।।7।।

चार चार उपवास पर, इक इक बेला जान।
इस विधि से उपवास सब, हो अस्सी परिमाण।।8।।

वन वन प्रति बेला किये, बेला होवे बीस।
पंच मेरु व्रत की कही, उत्तम विधी मुनीश।।9।।

यदि इतनी शक्ति नहीं, करो शक्ति अनुसार।
व्रत की उत्तम भावना, करे भवोदधि पार।।10।।

– दोहा –

व्रतपूर्ण हुये उद्यापन विधि, हेतू गुरु के सन्निध जाके।
आज्ञा ले आशिष ले करके, निज शक्ति समान करे आके।।
सुवरन चाँदी पाषाणादी, से सुन्दर मेरु बनवाओ।।11।।

यदि इतनी शक्ति नहीं हो तो, मेरु विधान पूजन करिये।
आचार्य निमंत्रण विधिवत् कर याजक की आज्ञा शिरधरिये।।
नानारंग चूर्णों से अथवा नाना विध रंगे चावलों से।
मंडल बनवाओ अति सुंदर, पाँचों मेरु चित्रित करके।।12।।

तोरण ध्वज चंद्रोपक घंटा, किंकिणियों छत्र चामरों से।
वसु मंगल द्रव्य कलश माला, पुष्पों कदली स्तंभों से।।
मंडल अत्यर्थ सजा उस पर, रजतादी के मेरु रखिये।
मंडल के मध्य सिंहासन पर, जिनमूर्ति स्थापित करिये।।13।।

सकलीकरणादि विधी करके, इंद्रादि प्रतिष्ठा विधि करिये।
शास्त्रोक्तपूर्वविधि को करके, मंडल पूजा क्रम से करिये।।

इसविधव्रत का निष्ठापन कर, तुम यथा शक्ति दानादि करो।
चउ विध संघ की पूजा करके, पिच्छी शास्त्रादि प्रदान करो।।14।।

पूजा पुस्तक या अन्य ग्रंथ, छपवाकर ज्ञानदान दीजे।
औषधि आहार अभय देकर, बहु पुण्य उपार्जित कर लीजे।।
जिन मंदिर में उपकरण दान, जीर्णोद्धारादिक भी करिये।
निजशक्ति के अनुरूप धर्म करके, भव भव का संकट हरिये।।15।।

– दोहा –

पंचमेरु व्रत जो करे, पंचकल्याणक पाय।
पंच परावृत नाशकर, पंचमगति को जाय।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचमेरु भक्ति:

– वंशस्थ छंद –

श्रीपंचमेरुस्थजिनेन्द्रगेहान् , प्रणम्य बिंबानि च वीरनाथं।
तत्राभिषेकाप्तजिनाधिपांश्च, तान् पंचमेरुन् किल संस्तवीमि।।1।।

– पृथ्वी छंद –

सुदर्शनगिरिं स्तुवे विजयमेर्वचलमंदरान्।
सुविद्युदनुमालिभूमिभृदनाद्यनंतात्मकान्।।
सुरेन्द्रविहितातिशायिजिनजन्मकालोत्सवे।
सुधर्मवरतीर्थकृत्स्नपनकैश्च पूज्यानिमान्।।2।।

– बसंततिलका छंद –

तीर्थंकरस्नपननीरपवित्रजातः,
तुंगोऽस्ति यस्त्रिभुवने निखिलाद्रितोऽपि।
देवेन्द्रदानवनरेन्द्रखगेन्द्रवंद्यः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।1।।

यो भद्रसालवननंदनसौमनस्यैः,
भातीह पांडुकवनेन च शाश्वतोऽपि।
चैत्यालयान् प्रतिवनं चतुरो विधत्ते,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।2।।

जन्माभिषेकविधये जिनबालकानाम् ,
वंद्याः सदा यतिवरैरपि पांडुकाद्याः।
धत्ते विदिक्षु महनीयशिलाश्चतसृः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।3।।

योगीश्वराः प्रतिदिनं विहरन्ति यत्र,
शान्त्यैषिणः समरसैकपिपासवश्च।
ते चरणर्द्धिसफलं खलु कुर्वतेऽत्र,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।4।।

ये प्रीतितो गिरिवरं सततं नमन्ति,
वंदन्त एव च परोक्षमपीह भक्त्या।
ते प्राप्नुवंति किल ज्ञानमतीं श्रियं हि,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।5।।

अंचलिका

इच्छामि भंत्ते। पंचमेरुभत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, इमम्हि मज्झलोए अड्ढाइज्जदीवमज्झट्ठिदसव्वोच्चमंदरसेलेसु भद्दसालणंदणसोमणस–पांडुकवणेसु चउचउदिसासु असीदिजिणायदणाणं पांडुवणविदिसासु तित्थयरण्हवणपवित्तपांडुपहुदिसिलाणं जिण–जिणघरवंदणट्ठविहरमाणचार–णरिद्धिजुत्तरिसीणं च णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

पंचमेरु पूजा

– दोहा –

चिच्चैतन्य प्रकाशमय, चिदानंद भगवान।
शुद्ध सिद्ध परमात्मा, नमूँ नमूँ गुणखान।।1।।

तीर्थंकर अभिषेक से, पावन पूज्य प्रसिद्ध।
पंचमेरु हैं सासते, ढाई द्वीप में सिद्ध।।2।।

सोलह सोलह जिनभवन, एक एक में जान।
पंचमेरु के जिननिलय, हैं अस्सी परिमाण।।3।।

जिनवर बिंब विराजते, सबमें इक सौ आठ।
भक्तिभाव से नमत ही, होवे मंगल ठाठ।।4।।

पंचमेरु मंगलकरण, व्रतउद्यापन हेतु,
विधिवत् मैं अर्चा करूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।5।।

इति जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– स्थापना–अडिल्लछंद –

सुरनरवंदित पंचमेरु नरलोक में।
ऋषिगण जहं विचरण करते निज शोध में।।
दुषमकाल में वहाँ गमन की शक्ति ना।
पूजूँ भक्ति समेत यहीं कर थापना।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

---

1. अस्सी।

– अष्टक–नन्दीश्वरपूजन की चाल –

सुरसरिता का जल स्वच्छ, बाहर मल धोवे।
जल से ही जिनपद पूज, अंतर्मल खोवे।।
पांचों सुरगिरि जिनगेह, जिनवर की प्रतिमा।
मैं पूजूँ भाव समेत, पाऊं निज महिमा।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचनद्रव सम वर गंध, चंदन दाह हरे।
चंदन से जजत जिनेश, भव–भव दाह हरे।।पांचों.।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिद्युति सम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
अक्षय अखंड सुख हेतु, जिनढिग पुंज धरें।।पांचों.।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं वकुल कमल कुसुमादि, सुरभित मन हारी।
भवविजयी जिनवरपाद, पूजत दुःखहारी।।पांचों.।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत शर्करयुत पकवान, लेकर थाल भरें।
निजक्षुधा रोग की हान, हेतू यजन करें।।पांचों.।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

मणिमय दीपक कर्पूर, ज्योती तिमिर हरे।
प्रभु पद पूजत ही शीघ्र, ज्ञान उद्योत करे।।पांचों.।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत अग्नी में।
कर अष्टकर्म चकचूर, पाऊँ निजसुख मैं।।पांचों।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम केला अंगूर, उत्तम फल लाऊँ।
शिवफलहित फल से पूज, स्वातम निधि पाऊँ।।पांचों।।8।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वरधूप फलों से युक्त, अर्घ समर्पं किया।।पांचों।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।**

(लवंग या पुष्पों से 9 बार, 27 या 108 बार करें)

जयमाला

– दोहा –

परमानन्द जिनेंद्र की, शाश्वत मूर्ति अनूप।
परम सुखालय जिनभवन, नमूँ–नमूँ चिद्रूप।।1।।

चौबोल छंद–(तर्ज–मेरी भावना)

मेरु सुदर्शन विजय अचल, मंदर विद्युन्माली जग में।
पूज्य पवित्र परमसुख दाता, अनुपम सुरपर्वत सच में।।
अहो अचेतन होकर भी ये, चेतन को सुख देते हैं।
दर्शन पूजन वंदन करते, भव–भव दुख हर लेते हैं।।2।।

अनादि अनिधन पृथिवीमय ये, सर्वरत्न से स्वयं बने।
भद्रसाल नंदन सुमनस वन, पांडुक वन से युक्त घने।।
सुरपति सुरगण सुरवनितायें, सुरपुर से आते रहते।
पंचम स्वर से जिनगुण गाते, भक्ति सहित नर्तन करते।।3।।

विद्याधरियाँ विद्याधर गण, जिनवंदन को आते हैं।
कर्मभूमि के नरनारी भी, विद्याबल से जाते हैं।।
चारण ऋषिगण नित्य विचरते, स्वात्मसुधारस पीते हैं।
निज शुद्धातम को ध्या ध्याकर, कर्मअरी को जीते हैं।।4।।

मैं भी वंदन पूजन अर्चन, करके भव का नाश करूं।
मेरे शिव पथ के विघ्नों को, हरो नाथ!यम त्रास हरूँ।।
बस प्रभु केवल 'ज्ञानमती' ही, देवो इकही आश धरूँ।
तुम पद भक्ति मिले भव भव में, जिससे स्वात्म विकास करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्यजन श्रीपंचमेरु, व्रत करें नित चाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित, महा पूजा करें बहुभाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो, अभिषेक सुरगिरिपर लहें।
त्रयज्ञानमति चउज्ञान धर, फिर अंत में केवल लहें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

सुदर्शन मेरु पूजा

–स्थापना–गीता छंद–

त्रिभुवन भवन के मध्य सर्वोत्तम सुदर्शन मेरु है।
यह प्रथम जंबूद्वीप में सर्वोच्च मेरु सुमेरु है।।
सोलह जिनालय में जिनेश्वर मूर्तियाँ हैं सासती।
थापूँ यहाँ उनको जजूँ, वे सर्व दुख संहारती।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक–अडिल्ल छंद–

गंगानदि को प्रासुक जल घट में भरूँ।
जल से पूजा करते सब कलिमल हरूँ।।
मेरु सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सुगंधित अष्ट गंध कर में लिया।
जिन पद चर्चत चाह दाह का क्षय किया।।मेरु।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता फलसम तंदुल धवल अखंड हैं।
पुंज धरत जिन आगे होत अनंद है।।

मेरु सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपादप के सुरभित सुमन मंगायके।
कामजयी जिनपाद जजूँ शिर नाय के।।मेरु.।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक बरफी पुआ सरस चरु ले लिया।
क्षुधाव्याधि हर तुम पद में अर्पण किया।।मेरु.।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत भर दीपक ज्योति सहित आरति करूँ।
मोह ध्वांत हर जिन अर्चूं भ्रम तम हरूँ।।मेरु.।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु वर धूप अग्नि में खेवते।
दुष्ट कर्म अरि दग्ध हुये तुम सेवते।।मेरु.।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता काजू द्राक्ष फलों को लाय के।
सरस मोक्ष फल हेतु जजूँ हरषाय के।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य भर थाल में।
पूजूँ अर्घ चढ़ाऊँ नाऊँ भाल मैं।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

परम शांति के हेतु, शांतिधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–प्रत्येक अर्घ्य–दोहा–

सर्वश्रेष्ठ गिरिराज है, मेरु सुदर्शन नाम।
चारों वन के जिनभवन, नितप्रति करूँ प्रणाम।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौबोल छंद–

मेरु सुदर्शन के पृथ्वी पर, भद्रसाल वन रम्य महान।
पूर्व दिशा में जिन मंदिर है, त्रिभुवन तिलक अतुल सुखदान।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सुराचल भद्रसाल में, दक्षिण दिश जिन मंदिर जान।
सुर नर किन्नर यक्ष यक्षिणी, विद्याधर गण पूजें आन।।
जल.।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम देवगिरि भद्रसाल में, पश्चिमदिश जिन भवन अनूप।
रत्नत्रय निधि के इच्छुक जन, पूजन करत लहें सुखरूप।।
जल.।।3।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालय जिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम मेरु के भद्रसाल में, उत्तर दिश जिनराज निकेत।
भव भय दुःख हरण हेतु भवि, नित प्रति पूजें भक्ति समेत।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।4।।

ॐ ह्री सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद–

मेरु सुदर्शन विषै, सुभग नंदन वन जानो।
सुरनरगण से पूज्य, पूर्व दिक् जिनगृह मानो।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाय, मिले निज संपति आई।।5।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन वन के मांहि, जिनालय दक्षिण दिश हैं।
नित्य महोत्सव साज, देवगण पूजन रत हैं।।जल.।।6।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयसर्व–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश जिननिलय, मनोहर नंदनवन में।
सुर विद्याधर रहें, सतत भक्तीरत जिन में।।जल.।।7।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयसर्व–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दनवन के उत्तर, जिन मंदिर सुखकारी।
उसमें जिनवर बिंब, दुरितहर मंगलकारी।।जल.।।8।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

वन सौमनस महान है, मेरु सुदर्शन माहिं।
पूरब दिश में जिन भवन, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाहिं।।9।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन सौमनस जिनेश गृह, दक्षिण दिशा मंझार।
वसु विधि अर्घ्य संजोय के, पूजों हो भव पार।।10।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस के स्वर्णमयी जिनधाम।
भक्तिभाव से अर्घ्य ले, पूजों जिनवर धाम।।11।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिश सौमनस में, श्री जिनभवन महान्।
त्रिभुवनतिलक प्रसिद्ध है, जजूँ अर्घ्य ले आन।।12।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद–

मेरु पर चौथा पांडुकवन, उसके पूरब दिश सुन्दर है।
रत्नों की मूर्ति से संयुत मणिकनकमयी जिनमंदिर हैं।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन में दक्षिण दिश का, जिन भवन अनुपम कहलाता।
जो दर्शन वंदन करते हैं, उनको यह अनुपम फलदाता।।

जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।14।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के पश्चिम दिश में, जिन चैत्यालय महिमाशाली।
सुरनर विद्याधर से पूजित, सब ताप हरे गुणमणिमाली।।
जल.।।15।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के उत्तरदिश में, शुभ त्रिभुवनतिलक जिनालय हैं।
नामोच्चारण से पाप दहें, भक्तों के लिये सुखालय हैं।।
जल.।।16।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–अडिल्ल छंद–

प्रथम मेरु के सोलह जिनगृह नित जजूँ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय पूर्ण सुख को भजूँ।।
काम विजेता जिनवरबिंब मनोज्ञ हैं।
पूजत ही निष्काम बनूँ अतियोग्य मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में जिनप्रतिमा जानिये।
सत्रह सौ अट्ठाइस संख्य बखानिये।।
प्रतिजिनगृह में इक सौ आठ प्रमाण हैं।
पूजूँ मैं रुचिधार मुझे सुख खान हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्र-सप्तशतअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

पांडुकवन के विदिक् में, शिला चार अभिराम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के मिले स्वात्म विश्राम।।3।।

ॐ ह्रीं पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य—ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

(लवंग या पुष्पों से 9 बार, 27 या 108 बार करें)

जयमाला

– दोहा –

सर्वोत्तम सर्वोच्च है, प्रथम मेरु गिरिराज।
उसकी यह जयमालिका, हर्षित गाऊं आज।।1।।

– शंभु छंद –

जय मेरु सुदर्शन है अनुपम, सोलह चैत्यालय से सोहे।
अध्यात्म शिरोमणि योगीजन, उनका भी अतिशय मन मोहे।।
उपवन वापी से कूटों से, परकोटों से सुर भवनों से।
मंडित रमणीक महासुन्दर, कांचन मणिमय शुभरतनों से।।2।।

पृथ्वी पर भद्रसाल वन है, चंपक तरु आदिक से भाता।
है पांचशतक योजन ऊपर, नन्दनवन अतिशय सुखदाता।।
इससे साढ़े बासठ हजार, योजन ऊपर सौमनस बनी।
छत्तीस हजार महायोजन, ऊपर पांडुकवन सौख्यघनी।।3।।

चारों वन के चारों दिश में, अकृत्रिम चैत्यालय मानो।
प्रति मंदिर इक सौ आठ कही, जिनप्रतिमा अतिशययुत जानो।।
इनके दर्शन से घोर महा, मिथ्यात्व तिमिर भी नश जाता।
सम्यग्दर्शन की ज्योति जगे, आत्मा आत्मा को लख पाता।।4।।

भव भव से संचित पाप राशि, इक क्षण में भस्म हुआ करती।
जिनराज चरण की भक्ती ही, भवि के भव भव दुःख को हरती।।

ये मूर्ति अचेतन होकर भी, चेतन को वांछित फल देतीं।
तीर्थंकर के अभिषव जल से, वे पूज्य हुई सुरवंद्य इला।।5।।

जय भद्रशाल के जिनमंदिर, जय नन्दनवन के जिनगेहा।
जय सौमनसं पांडुकवन के, जिनभवन जजूँ मैं धरनेहा।।
ये मूर्ति अचेतन होकर भी, चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनके सब संकट हर लेतीं।।6।।

– दोहा –

मेरुसुदर्शन की भविक, पूजा करो पुनीत।
मेरुसदृश उत्तुंग फल, लहो शीघ्र ही मीत।।7।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– गीता छंद –

जो भव्यजन श्रीपंचमेरु, व्रत करें नित भाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित, महा पूजा करें बहुभाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो अभिषेक सुरगिरिपर लहें।
त्रयज्ञानमति चउज्ञान धर फिर अंत में केवल लहें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ३

विजय मेरु पूजा

–स्थापना–दोहा–

पूर्व धातकी खंड में विजयमेरु अभिराम।
जिसमें सोलह जिनभवन हैं शाश्वतगुणधाम।।1।।

जिनवर प्रतिमा मणिमयी शिवसुखफल दातार।
आह्वानन विधि से यहाँ पूजूँ अष्ट प्रकार।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं–चामर छंद–

क्षीरसिंधुनीर लाय स्वर्णभृँग में भरूँ।
श्री जिनेन्द्र पाद में चढ़ाय कर्ममल हरूँ।।
मेरुविजय के जिनेन्द्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध अतिसुगंध हेमपात्र में लिये।
नाथ पाद अर्च के समस्त दाह नाशिये।।मेरु.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकांति के समान श्वेत शालि लाइया।
नाथ पाद के समीप पुंज को चढ़ाइया।।

मेरुविजय के जिनेन्द्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मोगरा जुही गुलाब लाइया।
कामनाश हेतु आप पाद में चढ़ाइया।।मेरु.।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप खज्जिकादि शर्करा विमिश्र ले।
भूख व्याधि नाशहेतु आपको समर्पि ले।।मेरु.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में संजोय दीप आरती करूँ।
भेदज्ञान को प्रकाश ज्ञान भारती वरूँ।।मेरु.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में सदा सुगंध धूप खेवते।
पापपुंज को जलाय स्वात्मसौख्य सेवते।।मेरु.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम औ अनार लाय थाल में भरे।
मोक्षफल निमित्त आज आप अर्चना करें।।मेरु.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंध अक्षतादि लेय अर्घ्य थाल में।
तीनरत्न प्राप्ति हेतु पूजहूँ त्रिकाल में।।मेरु.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

परमशांति के हेतु, शांतिधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकलसंघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– सोरठा –

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, जिनवर प्रतिमा मैं जजूँ।
निज आतम कर शुद्ध, पाऊँ परमानंद मैं।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– नरेन्द्र छंद –

विजय मेरु के पृथ्वी तल पर, भद्रशाल वन सोहे।
उसमें पूरबदिशि जिनमंदिर, सुरनरगण मन मोहे।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में, बसूँ मोक्षपुर जाके।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के भद्रशाल में दक्षिणदिश जिनधामा।
शाश्वत जिनवर बिंब मनोहर अतुल अमल अभिरामा।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुतिय मेरु के भद्रशाल में पश्चिम दिश जिनगेहा।
जिनप्रतिमा को सुरपति नरपति वंदे भक्ति सनेहा।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयसुराचल भद्रशाल में उत्तरदिश जिनधामा।
भवविजयी की प्रतिमा उनमें जजत लहें शिवधामा।जल.।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– चाल छंद–नन्दीश्वर पूजा –

श्री विजय मेरुवर शैल, जजतें अघ नाशें।
नंदनवन पूरब जैन, मंदिर अति भासे।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय, आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु दक्षिण माहिं, नंदन वन प्यारा।
जिन भवन अनुपम ताहिं, सब जग में न्यारा।।यतिगण.।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन पश्चिम माहिं, जिन मंदिर भावे।
इस ही मेरु पर इन्द्र, परिकर सह आवें।।यतिगण.।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश नंदन रम्य, जिनवर आलय है।
इस विजय मेरु के मध्य, धर्म सुधालय है।।यतिगण.।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– कुसुमलता छंद –

विजयमेरु नंदनवन ऊपर, वन सौमनस कहा सुखकार।
अकृत्रिम जिनभवन पूर्वदिश, सुरकिन्नर मन हरत अपार।।

मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य चढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस वनी के, दक्षिण दिश जिन भवनविशाल।
गर्भालय में मणिमय प्रतिमा, भविजन पूजन करत त्रिकाल।।
मैं पूजूँ.।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस वनी में जिनवर सदन मदन मदहार।
[1]मृत्युंजयि की प्रतिमा उनमें, मुनिगण वंदत मुद मनधार।।
मैं पूजूँ.।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस रम्यवन, उसमें उत्तर दिशा मंझार।
श्रीजिनमंदिर में जिन प्रतिमा, नितप्रति वंदूं बारम्बार।।
मैं पूजूँ.।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– चौपाई छंद –

विजयमेरु पांडुकवन जानो, पूरब दिश जिनभवन बखानो।
सुरपति खगपति नित्य जजें हैं, हम भी अर्घ्य चढ़ाय भजे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पांडुकवन दक्षिण जानो, शाश्वत श्री जिनभवन महानो।
सुरललना जिनवर गुण गावें, हम भी पूजें जिनपद ध्यावें।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आयुकर्म से रहित जिनेश्वर।

इस वन में पश्चिम दिश माहीं, जिनगृह सम उत्तम कुछ नाहीं।
किन्नरियाँ वीणा स्वर साजें, हम भी पूजें सब अघ भाजें।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु पांडुकवन सोहे, जिनवर भवन सबन मन मोहे।
देव देवियाँ जिनपद पूजें, हम भी यहाँ तुम्हें नित पूजें।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा–पूर्णार्घ्य –

सोलह जिनवर भवन हैं, विजयमेरु के नित्य।
अर्चूं पूरण अर्घ्य ले, पूर्ण सौख्य हो नित्य।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगृह के जिनबिंब को, नमूँ भक्ति मन लाय।
सत्रह सौ अठबीस हैं, पूजूँ अर्घ चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्त–शताष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु पांडुकवन विदिक् पांडुकशिलादि चार।
नमूँ नमूँ जिनवर न्हवन, पूत शिला सुखकार।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपांडुकवनविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्री पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
(लवंग या पुष्पों से 9 बार, 27 या 108 बार करें)

जयमाला

– शंभु छंद –

यह विजयमेरु चौरासि सहस, योजन उत्तुंग कहाता है।
वन भद्रसाल से पंचशतक, योजन पर नंदन आता है।।

योजन साढ़े पचपन हजार, ऊपर सौमनस सुहाता है।
योजन अट्ठाइस सहस जाय, पांडुकवन सबको भाता है।।1।।

–दोहा–

इसमें सोलह जिनभवन, त्रिभुवन तिलक महान।
उनमें जिनप्रतिमा विमल, नमूँ नमूँ गुण खान।।2।।

–चाल–हे दीनबन्धु–

देवाधिदेव श्री जिनेन्द्रदेव हो तुम्हीं।
अनादि औ अनंत स्वयंसिद्ध हो तुम्हीं।।
हे नाथ ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधि पाय, मैं धनवान हो गया।।3।।

रस गंध सरस रूप से मैं शून्य ही कहा।
इस मोह से भी मेरा संबंध ना रहा।।हे नाथ.।।4।।

ये द्रव्यकर्म आत्मा से बद्ध नहीं हैं।
ये भावकर्म तो मुझे छूते भी नहीं हैं।।हे नाथ.।।5।।

मैं एकला हूँ शुद्ध, ज्ञान दरश स्वरूपी।
चैतन्य चमत्कार, ज्योति पुंज अरूपी।।हे नाथ.।।6।।

मैं नित्य हूँ अखंड हूँ, आनंद धाम हूँ।
शुद्धात्म हूँ परमात्म हूँ, त्रिभुवन ललाम हूँ।।हे नाथ.।।7।।

मैं पूर्ण विमल ज्ञान, दर्श वीर्य स्वभावी।
निज आत्मा से जन्य, परम सौख्य प्रभावी।।हे नाथ.।।8।।

परमार्थ नय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
ये भावना ही एक सर्वसिद्धि प्रदाता।।हे नाथ.।।9।।

व्यवहारनय से यद्यपि, अशुद्ध हो रहा।
संसार पारावार में ही, डूबता रहा।।हे नाथ.।।10।।

फिर भी तो मुझे आज मिले आप खिवैया।
निज हाथ का अवलम्ब दे, भव पार करैया।।
हे नाथ ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधि पाय, मैं धनवान हो गया।।11।।

मैं आश यही लेके नाथ पास में आया।
अब वेग हरो जन्म व्याधि, खूब सताया।।हे नाथ.।।12।।

हे दीन बंधु शीघ्र ही निज पास लीजिये।
भव सिंधु से निकाल, मुक्तिवास दीजिये।।हे नाथ.।।13।।

घत्ताछन्द

जय जय सुखकंदा, अमल अखंडा,
त्रिभुवन कंदा तुमहि नमूँ।
जय ''ज्ञानमति'' मम, शिवतिय अनुपम,
तुरत मिलावो नित प्रणमूँ।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयसर्वजिन–बिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो भव्यजन श्रीपंचमेरु, व्रत करें नित चाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित, महापूजा करें बहुभाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो, अभिषेक सुरगिरि पर लहें।
त्रयज्ञानमति चउज्ञान धर, फिर अंत में केवल लहें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.४

अचल मेरु पूजा

–स्थापना–गीता छंद–

श्री अचलमेरु राजता है, अपर धातकि द्वीप में।
सोलह जिनालय तास में, जिनबिंब हैं उन बीच में।।
प्रत्यक्ष दर्शन हो नहीं, अतएव पूजूँ मैं यहाँ।
आह्वान विधि करके प्रभो, थापूँ तुम्हें आवो यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक–गीता छंद–

गंगानदी का स्वच्छ प्रासुक नीर झारी मैं भरूँ।
संसार के त्रयताप शांति हेतु त्रयधारा करूँ।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूं सकल जगद्वंद्व को।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन पंक शीतल भर कटोरी में लिया।
जिनपाद पंकज पूजते भवतप्त मन शीतल किया।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्धाब्धि फेन समान उज्ज्वल धौत तंदुल थाल में।
जिनचरण वारिज के निकट धर पुंज नाऊँ भाल मैं।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली मौलसिरि सुरभित सुमन भर लाइया।
कंदर्प दर्प विनाशने को नाथ चरण चढ़ाइया।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूं सकल जगद्वंद्व को।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान फेनी मोदकादिक सरस थाली में भरें।
क्षुध रोग हर तुम पद कमल पूजत क्षुधा डाकिनि हरें।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे अंधेर सब जग का हरे।
तुम चरण पूजा दीप से मन ध्वांत को क्षण में हरे।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप अग्नी पात्र में खेऊँ सदा।
अंतर कलुष बाहर भगे नहिं स्वप्न में हो भ्रम कदा।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार फल अखरोट आदिक लाइया।
अक्षय सुखद फल हेतु जिनपद पद्म निकट चढ़ाइया।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालय–जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज दीप धूपरु फल लिया।
निज संपदा के हेतु भगवन् ! अर्घ तव अर्पण किया।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगन्धित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–दोहा–

अचल मेरु के जिनभवन, पूजूँ भक्ति समेत।
पुष्पांजलि कर पूजते, जिनमन्दिर भवसेतु।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–अडिल्ल छंद–

अचलमेरु में भद्रशाल वन जानिये।
तामें पूरब दिश जिनमन्दिर मानिये।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूँ नित भाव से।
निजगुण संपति हेतु भजूँ अति चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय मेरु के भद्रशाल में राजता।
दक्षिणदिश जिनभवन अनूपम शासता।।अर्घ्य.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्चैत्यालय–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल में रम्य है।
पश्चिम दिश जिनसदन सकलसुखसद्म हैं।।अर्घ्य.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्चैत्यालय–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल उत्तर दिशी।
जिनमंदिर में जिनप्रतिमा अनुपमकृती।।अर्घ्य.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्चैत्यालय–जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

अचलमेरु के नंदनवन में, पूर्व दिशी जिन गेहा।
निज आतम अनुभव रसस्वादी, मुनिगण नमत सनेहा।।
नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु नंदनवन दक्षिण, सुरवंदित जिनधामा।
इंद्रिय सुख त्यागी वैरागी, यति वंदें निष्कामा[1]।।

नीरा.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम ध्यानी मुनि ज्ञानी, जिन का ध्यान धरे हैं।
अचलमेरु नंदन पश्चिम दिश, जिनगृह पाप हरे हैं।।

नीरा.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के नंदनवन में, उत्तर दिश जिनगृह हैं।
समरस निर्झर जल अवगाही, गणधर गण वंदत हैं।।

नीरा.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. इच्छारहित।

–दोहा–

अचलमेरु वन सौमनस, पूरब दिश जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, सिद्ध करो सब काम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के दक्षिण दिश जिनगेह।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, करो हमें गतदेह[1]।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिशिजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, पश्चिम जिनगृह सिद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, करूँ मोह अरि बिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिशिजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, उत्तर जिनगृह सार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, होऊँ भवदधि पार।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितउत्तरदिशिजिनालयजिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई छन्द–

अचलमेरु पांडुकवन जान, पूरब दिश जिननिलय[2] महान।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगाान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन नाम, दक्षिण दिशि अनुपम जिनधाम।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगाान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अशरीरी सिद्ध पद। 2. जिनमंदिर।

अचलमेरु पांडुकवन कहा, पश्चिम दिश जिनमंदिर रहा।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगाान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन सही, उत्तर दिशि जिनगृह सुख मही।
अकृत्रिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगाान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

अचलमेरु चउवन विषैं, चार चार जिनधाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ नित्य निष्काम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में अतुल, जिनवर बिंब महान।
सत्रहसौ अठबीस है, झुक झुक करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्त–शतअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के विदिश में पांडुकशिलादि वंद्य।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, नमूँ नमूँ सुखकंद।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसम्बन्धिपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।
(लवंग या पुष्पों से 9 बार, 27 या 108 बार करें)

जयमाला

– दोहा –

कल्पवृक्ष चिंतामणी, चिच्चेतन भगवान।
चिन्मूरति 'जिनमूर्ति को, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।

– रोला छंद –

जय जय अचल सुमेरु, शाश्वत सिद्ध महाना।
जय जय पुण्य निकेत अतिशय सौख्य खजाना।।
जय जय श्री जिनगेह सोलह स्वर्णमयी हैं।
जय जय श्री जिनबिंब नाना रत्नमयी हैं।।1।।

मानस्तंभ ध्वजादि तोरण मणिमालायें।
तीन कोट सिद्धार्थ चैत्य तरु बहु गायें।।
वैभव अतुल असंख्य सहजिक रहें वहाँ पे।
सुरपति नरपति नित्य पूजन करें तहाँ पे।।2।।

चारण ऋषिगण आय आतम ध्यान धरे हैं।
कर्मकलंक नशाय उत्तम सौख्य भरे हैं।।
सग्यग्दर्शन पाय भविजन तृप्त सु होते।
आत्म स्वरूप विचार भव भव का भय खोते।।3।।

मैं नारक तिर्यंच देव मनुष्य नहीं हूँ।
पुरुष नपुंसक रूप स्त्रीरूप नहीं हूँ।।
सब पुद्गल पर्याय उपज उपज कर विनशे।
कर्म उदय से जीव इनहीं में नित विलसे।।4।।

निश्चय नय से नित्य परमानंद स्वभावी।
मैं अनंतगुण पुंज केवलज्ञान प्रभावी।।
मैं मुझमें थिर होय निज में ही निज पाऊँ।
प्रभु वह दिन कब होय जब मैं ध्यान लगाऊँ।।5।।

तुम भक्ति से नाथ शक्ति प्रगट हो मेरी।
करूँ कर्म का नाश छूटे भव भव फेरी।।
जब तक मुक्ति न होय तब तक भक्ति हृदय में।
रहे आपकी देव! ''ज्ञानमती'' रुचि मन में।।6।।

– दोहा –

जो पूजें जिनवर भवन, भक्ति भाव से नित्य।
जो जिनगुण संपति लहें, अनुक्रम से भवभिद्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

– गीता छंद –

जो भव्यजन श्रीपंचमेरु, व्रत करें नित चाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित, महा पूजा करें बहुभाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो, अभिषेक सुरगिरि पर लहें।
त्रय ज्ञानमति चउज्ञान धर, फिर अंत में केवल लहें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.५

मंदर मेरु पूजा

–स्थापना–नरेन्द्र छंद–

पुष्करार्ध वर द्वीप पूर्व में मंदर मेरु सोहे।
उसके सोलह जिनमंदिर में जिनप्रतिमा मन मोहे।।
भक्ति भाव से आह्वानन कर पूजा पाठ रचाऊँ।
भव भव के संताप नाश कर स्वातम सुख को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक–भुजंगप्रयात छंद–

पयोराशि को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो के पदाम्भोज धारा कराऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय चंदनादि सुवासीत लाऊँ।
प्रभो आपके पाद में नित चढ़ाऊँ।।जजू.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल शालि तंदुल लिया थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें पुंज सद्भाव धर के।।जजू.।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्पमाला बनाऊँ।
महा काम शत्रुंजयी को चढ़ाऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लाडू इमरती बनाके।
क्षुधा व्याधि नाशूँ प्रभू को चढ़ाके।।जजू.।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की लोक उद्योतकारी।
तुम्हें पूजते ज्ञान प्रद्योत भारी।।जजू.।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊँ सदा मैं।
करम की भसम को उड़ाऊँ मुदा मैं।।जजू.।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अमरूद अमृत फलों से।
जजूँ मैं बचूँ कर्म अरि के छलों से।।जजू.।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य से अर्घ करके।
चढ़ाऊँ तुम्हें सर्वदा प्रीति धर के।।जजू.।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

परम शांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे निज सुखसार, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– दोहा –

मंदरमेरु जिनभवन, सर्वसौख्य भंडार।
पुष्पांजली चढ़ाय के, जजूँ नित्य चित धार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– दोहा –

पुष्करार्धवर पूर्व में, मंदर मेरु महान।
भद्रसाल पूरवदिशी, जजूँ जिनालय आन।।1।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल दक्षिण दिशा, जिनगृह शाश्वत सिद्ध।
तिनमें जिनवर बिंब को, जजूँ मिले सब सिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल में अपरदिश, जिन मंदिर सुखकार।
जिन प्रतिमा को पूजहूँ, मिले भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू भूमि में, भद्रसाल वन जान।
उत्तर दिश जिन भवन को, जजूँ मोक्ष हित मान।।4।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– गीता छंद –

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में मंदरगिरी कनकाभ है।
जिनवर न्हवन से पूज्य उत्तम, सुरगिरी विख्यात है।
नंदन विपिन[1] पूरब दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।1।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज और पर का करें अंतर, जो निरंतर मुनिवरा।
विचरण करें जिनवंदना हित, वे सदैव दिगंबरा।।
नंदन विपिन दक्षिण दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।2।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यमराज का भय नाशते, सब कामना पूरी करें।
शुद्धात्म रस प्यासे मुनी की, भावना पूरी करें।।
नंदन विपिन पश्चिम दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।3।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव राग आग बुझावने, तुम भक्ति गंगा नीर है।
स्नान जो इसमें करें, उनकी हरे सब पीर हैं।।

---

1. वन।

नंदन विपिन उत्तर दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूँ सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।4।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद–

मंदरमेरु माहिं, वन सौमनस सुहावे।
पूरव दिश जिनगेह, पूजत सौख्य उपाये।।
राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुःख देते।
तुम भक्ती परसाद, तुरत नशें त्रय एते।।1।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनपूर्वदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु चतुर्थ महान, वन सौमनस बखाना।
दक्षिण दिश जिनधाम, मृत्युंजय परधाना।।राग.।।2।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनदक्षिणदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु अनूप, वन सौमनस विशाला।
पश्चिम दिश जिनवेश्म, देता सौख्य रसाला।।राग.।।3।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनपश्चिमदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरू माहिं, वन सौमनस कहा है।
उत्तर दिश जिनधाम, शाश्वत शोभ रहा है।।राग.।।4।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनउत्तरदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नाराच छन्द (चाल–पार्श्वनाथ देव सेव....)–

पुष्करार्ध पूर्व खंड द्वीप में सुमेरु है।
तास पांडुके वनी, सुपूर्व दिक्क में रहे।।
जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।1।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनपूर्वदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदराद्रि पांडुकेसु दक्षिणी दिशा तहाँ।
साधु वृंद वंदना जिनेश की करे वहाँ।।
जैन वेश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ चढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।2।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु जो चतुर्थ है चतुर्थ रम्य जो वनी।
पश्चिमी दिशी सुकल्प वृक्ष पंक्तियाँ घनी।।जैन.।।3।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनपश्चिमदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदराचले चतुर्थ, जो वनी प्रसिद्ध है।
उत्तरी दिशा तहाँ मनोज्ञता विशिष्ट है।।जैन.।।4।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनउत्तरदिग्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–सोरठा–

सोलह श्री जिनधाम, मंदर मेरु में कहे।
जिनवर बिंब महान, अर्चूं पूरण अर्घ्य ले।।1।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस, जिनवर प्रतिमा नित नमूँ।
नित्य नमाऊँ शीश, पूरण अर्घ चढ़ाय के।।2।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत–अष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदर मेरू विदिक्क, पांडुक आदि शिला कहीं।
नमूँ नमूँ प्रत्येक, जिन अभिषेक पवित्र है।।3।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्री पंचमेरुसंबंधिअशीतिजिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।
(लवंग या पुष्पों से 9 बार, 27 बार या 108 बार करें)

जयमाला

–दोहा–

जय जय मंदर मेरु नित, जय जय श्री जिनदेव।
गाऊँ तुम जयमालिका, करो विघन घन छेय।।1।।

–शेर छंद–चाल–हे दीन बंधु–

जैवंत मूर्तिमंत मेरु मंदराचला।
जैवंत कीर्तिमंत जैन बिंब अविचला।।
जैवंत ये अनंतकाल तक भि रहेंगे।
जैवंत मुझ अनंत सुख निमित्त बनेंगे।।1।।

जै भद्रसाल आदि चार वन के आलया।
जै जै जिनेंद्र मुर्तियों से वे शिवालया।।
जै नाममंत्र भी उन्हों का सारभूत है।
जो नित्य जपे वो लखे आतम स्वरूप हैं।।2।।

भव भव में दुःख सहे अनंत काल तक यहाँ।
ना जाने कितने काल मैं निगोद में रहा।।
तिर्यंचगति में असंख्य वेदना सही।
नरकों के दुःख को कहें तो पार ही नहीं।।3।।

मानुष गति में आयके भी सौख्य न पाया।
नाना प्रकार व्याधियों ने खूब सताया।।
अनिष्ट योग इष्ट का वियोग तब हुआ।
तब आर्त रौद्र ध्यान बार बार कर मुआ।।4।।

संक्लेश से मर बार बार जन्म को धरा।
आनंत्य बार गर्भवास दुःख को भरा।।

मैं देव भी हुआ यदि सम्यक्त्व बिन रहा।
संक्लेश से मरा पुनः एकेंद्रि हो गया।।5।।

हे नाथ सभी दुःख से मैं ऊब चुका हूँ।
अत्र आपकी शरणागती में आके रुका हूँ।
करके कृपा स्वहाथ का अवलंब दीजिये।
मुझ 'ज्ञानमती' को प्रभो! अनंत[1] कीजिये ।।6।।

–धत्ता छंद–

गुण गण मणिमाला, परम रसाला, जो भविजन निज कंठ धरें।
वे भव दावानल शीघ्र शमन कर, मुक्ति रमा को स्वयं वरें।।7।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो भव्यजन श्रीपंचमेरु, व्रत करें नित चाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित महा, पूजा करें बहुभाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो, अभिषेक सुरगिरि पर लहें।
त्रय ज्ञानमति चउज्ञान धर, फिर अंत में केवल लहें।।

इत्याशीर्वादः।

1. अन्त रहित।

पूजा नं. ६

विद्युन्माली मेरु पूजा

– स्थापना–गीता छंद –

श्री मेरु विद्युन्मालि पंचम, द्वीप पुष्कर अपर में।
तीर्थंकरों का न्हवन होता है सदा तिस उपरि में।।
सोलह जिनालय हैं वहाँ, सुरवंद्य जिन प्रतिमा तहाँ।
आह्वान कर पूजूँ सदा, मैं भक्ति श्रद्धा से यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टकं–शंभु छंद –

क्षीरोदधि का शुचि जल लेकर तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव का कलिमल धोने को श्रद्धा से अति हरषाया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन कुंकुम गंध लिये जिन चरण चढ़ाने आया हूँ।
मोहारिताप संतप्त हृदय प्रभु शीतल करने आया हूँ।।
विद्यु.।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरांबुधि फेन सदृश उज्ज्वल अक्षत धोकर के लाया हूँ।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतु प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
विद्यु.।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चंपक अरविंद कुमुद सुरभित पुष्पों को लाया हूँ।
मदनारिजयी तव चरणों में मैं अर्पण करने आया हूँ।।
विद्यु.।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली खाजा गूझा मोदक आदिक बहु लाया हूँ।
निज आतम अनुभव अमृत हित नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
विद्यु.।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक में ज्योति जले सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही सज्ज्ञान ज्योति निज में भासे।।
विद्यु.।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि धूपायन में खेते क्षण ही।
कटुकर्म दहन हो जाते हैं मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
विद्यु.।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूरों के गुच्छे अति सरस मधुर लाया।
परमानंदामृत चखने हित फल से पूजन कर सुख पाया।।
विद्यु.।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु वर दीप धूप फल लाया हूँ।
निज गुण अनंत की प्राप्ति हेतु तुम अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय हैं।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन-बिंबेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– सोरठा –

परम शांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।
शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगन्धित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– दोहा –

पंचममेरु जिन भवन, शाश्वत नित शोभंत।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले स्वात्म आनन्द।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– गीता छंद –

श्री मेरु पंचम की धरा पर भद्रसाल सुवन कहा।
ता पूर्व दिश जिनधाम शाश्वत मूर्ति से शोभित अहा।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्र्य सुख साम्राज्य हेतु मैं करूँ नित वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु विद्युन्मालि में वन भद्रसाल जु सोहता।
दक्षिण दिशा में जिनभवन निज विभव से मन मोहता।।
जल.।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिन-बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु प्रथमहि ''वन विषे'' पश्चिम दिशा में जिनभवन।
उसमें जिनेश्वर बिंब शाश्वत, राजते भव भय मथन।।
जल.।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिन-बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु के भूवन विषै उत्तरदिशी जिन सद्म हैं।
उसमें महामहनीय जिनवर, बिंब के पदपद्म हैं।।
जल.।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिन-बिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– गीता छंद –

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में है, पाँचवाँ सुरगिरि कहा।
नंदन विपिन में पूर्वदिक्, जिनगृह अनूपम छवि लहा।।
चंचल मनोमर्कटविजेता[1], साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल पंचम में सदा, नंदन सुवन विख्यात है।
दक्षिण दिशा में जिनभवन, पूजें भविक हरषात हैं।।
चंचल.।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मनरूपी बन्दर को वश करने वाले।

पंचम सुराचल[1] में विपिन[2], नंदन अतुल महिमा धरे।
पश्चिम दिशा में जैनगृह, अतिशयभरी प्रतिमा धरे।।
चंचल.।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल विद्युन्मालि में, नंदनवनी तरु पंक्ति से।
जन मन हरे उत्तरदिशा के, मणिमयी जिनसद्म[3] से।।
चंचल.।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिनन्दनवनोत्तरदिग्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

कनकाचल[4] पंचम विषे, वन सौमनस रसाल।
पूरबदिश में जिनभवन, अर्च हरूँ जंजाल।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनपूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि वन सौमनस में, दक्षिण दिश जिनधाम।
तिनकी जिनप्रतिमा जजूँ, पूर्ण होय सब काम।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल[5] वन सौमनस, पश्चिम दिश जिनगेह।
इन्द्रवंद्य जिनबिंब को, पूजूँ धर मन नेह।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरु में, वन सौमनस अनूप।
उत्तरदिश जिनवेश्म को, जजत मिले निजरूप।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनउत्तरदिग्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मेरु। 2. वन। 3. जिनमंदिर। 4. मेरु। 5. मेरु।

– मोतीदाम छंद –

सुराचल पंचम में अभिराम, वनी पांडुक अतिरम्य ललाम।
जिनालय पूरबदिश में जान, जजूँ कर जोड़ करो शिवथान।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनपूर्वदिग्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुराद्री[1] विद्युन्माली नाम, सरस वन पांडुक मुनि विश्राम।
जिनालय दक्षिणदिश में सार, जजूँ कर जोड़ करो भव पार।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकपर्वत[2] पंच शिवकार, सुवन पांडुक में सुर परिवार।
जिनालय पश्चिमदिश रत्नाभ, जजूँ जिननाथ करो शिवलाभ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य–दोहा –

विद्युन्माली मेरु में सोलह जिनवर धाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ लहूँ शिवधाम।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस हैं, जिनवर बिंब महान।
पूरण अर्घ चढ़ाय के, नमूँ नमूँ गुण खान।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्त–शतअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुक वन के विदिक् में, पांडुशिलादि प्रसिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भाव से, लहूँ आत्मसुख सिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।
(लवंग या पुष्प से 9 बार, 27 बार या 108 बार करें)

1. मेरु। 2. मेरु।

जयमाला

– शंभु छंद –

जय जय विद्युन्माली मेरु, जय जय सुवरनमय जिनगेहा।
जय जय मृत्युंजयि जिनप्रतिमा, जय जय सुर पूजें धर नेहा।।
जय जय कृषि गगन गमनचारी, श्रद्धा से वंदन करते हैं।
जय जय मुनि समरस आस्वादी स्वात्मा का चिंतन करते हैं।।1।।

मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, चित्पिंड अखंड अरूपी हूँ।
स्वाभाविक दर्शन ज्ञान वीर्य, सुखरूप अचिन्त्य स्वरूपी हूँ।।
मैं हूँ अनंत गुण रत्नराशि मैं परम ज्योतिमय परमात्मा।
मैं सकल विमल औ अकल अमल हूँ परमानन्दमयी आत्मा।2।।

यद्यपि व्यवहारनयापेक्षा मैं दीन दुखी संसारी हूँ।
इन कर्मों का कर्ता भोक्ता नाना प्रकार तनुधारी हूँ।।
भव पंच परावर्तन कर कर चहुंगति में घूमा करता हूँ।
बस जन्म मरण के चक्कर में निशदिन ही झूमा करता हूँ।।3।।

फिर भी निश्चयनय से मैं ही नित शुद्ध सिद्ध परमात्मा हूँ।
रस गंध वर्ण स्पर्श रहित चिन्मूरति चैतन्यात्मा हूँ।।
ये राग रु द्वेष विभाव भाव सब कर्मोदय से आते हैं।
जब कर्म बंध सम्बन्ध नहीं तब कैसे ये रह पाते हैं।।4।।

निश्चय व्यवहार उभयनय से मैं तत्त्वों का ज्ञाता होऊँ।
फिर नय का आश्रय छोड़ सभी इक निर्विकल्प में रत होऊँ।।
मैं ध्याता हूँ तुय ध्येय ध्यान फल आदिक भेद समाप्त करूँ।
बस एकाकी एकत्व लिये निज में ही निज को प्राप्त करूँ।।5।।

प्रभु ऐसी स्थिति आने तक तुम चरण कमल का ध्यान करूँ।
पूर्णैक 'ज्ञानमति' पाने तक पूजूँ वंदूं गुणगान करूँ।।
हे नाथ! तुम्हारी भक्ति का मुझको फल केवल यही मिले।
बस पास तुम्हारे आ जाऊँ ऐसा मेरा सौभाग्य खिले।6।।

– दोहा –

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, विद्युन्माली मेरु।
पूजत ही निज सुख मिले, मिटे जगत का फेर।।7।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्यजन श्री पंचमेरु, व्रत करें नित चाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित महा, पूजा करें बहुभाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो, अभिषेक सुरगिरि पर लहें।
त्रय ''ज्ञानमति'' चउज्ञान धर फिर अंत में केवल लहें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

महार्घ्य जयमाला

–दोहा–

चिन्मय चिच्चिंतामणी, चिदानंद चिद्रूप।
अमल निकल परमात्मा, परमानंद स्वरूप।।1।।

नमूँ नमूँ जिन सिद्ध औ, स्वयंसिद्ध जिनबिंब।
पंचमेरु वंदन करूँ, हरूँ जगत दुख निंद्य।।2।।

–चाल–हे दीनबन्धु–

जैवंत पंचमेरु ये सौ इन्द्र वंद्य हैं।
जैवंत ये मुनीन्द्र वृंद से भि वंद्य है।।
जैवंत जैनसद्म ये अस्सी सु संख्य हैं।
जैवंत मूर्तियाँ अनंत गुण धरंत हैं।।3।।

सुदर्शनाद्रि तुंग एक लक्ष योजना।
चउमेरु तुंगलक्ष चुरासी सुयोजना।।
भूपरसुमेरु दश हजार योजनों रहा।
योजन चुराऩवे सहस है चार का कहा।।4।।

प्रत्येक में हैं भद्रसाल आदि चार वन।
प्रत्येक वन में चार चार रम्य जिन भवन।।
लंबे ये कोश चार सौ ऊँचे हैं तीन सौ।
उत्कृष्ट ये जिनेन्द्र गेह चोड़े हैं द्विसौ।5।।

मध्यम प्रमाण इससे अर्ध जैन वेश्म का।
इससे भी अर्ध है जघन्य जैन सद्म का।।
वन भद्रसाल नंदनों के भवन उत्तमा।
पांडुक के हैं जघन्य सौमनस के मध्यमा।।6।।

पांडुकवनी ईशान में पांडुक शिला कही।
अभिषेक भरत क्षेत्र के तीर्थेश का यहीं।।

वायव्य दिशा में पांडुकंबला शिला कही।
पश्चिम विदेह के जिनेन्द्र का न्हवन यहीं।।7।।

रक्ताशिला नैऋत विदिश में मानिये सही।
अभिषेक ऐरावत जिनेन्द्र का सदा यहीं।।
आग्नेय दिश में रक्तकंबला शिला सही।
पूरब विदेह तीर्थकृत का हो न्हवन यहीं।।8।।

ये सब शिलायें अर्धचन्द्र के समान हैं।
सौ योजनों लंबी तथा चौड़ी पचास हैं।।
मोटी हैं योजनाष्ट इनके मध्य सिंहासन।
सौधर्म औ ईशान इन्द्रहेतू भद्रासन।9।।

तीर्थंकरों के जन्मते हि इन्द्र आयके।
प्रभु को उन्हीं उन्हीं शिला पे लेके सुजाय के।।
पय से भरे कलश हजार आठ अधिक से।
जन्माभिषेक नाथ का करते सुविभव से।।10।।

सब पाँच भरत पाँच ऐरावत सुक्षेत्र हैं।
सब इक सौ साठ पूर्व औ पश्चिम विदेह हैं।।
ये एक सौ सत्तर कहीं हैं कर्मभूमियाँ।
तीर्थंकरों के जन्म से पवित्र भूमियाँ।।11।।

ये पाँच मेरु ढाई द्वीप में प्रसिद्ध हैं।
अनादि औ अनंत काल तक स्वतन्त्र हैं।।
भूकायिके सुरत्न बहुत वर्ण के बने।
वे रत्न ही इन मेरु रूप स्वयं परिणमें।12।।

इन मेरु के वनों की तो अद्भुत बहार है।
चंपक अशोक आम्र सप्तच्छद प्रकार है।।
चंदन सु पारिजात औ घनसार मकहते।
श्रीफल सुपारी जायपत्रि तरु लवंग के।13।।

नारंग आदि विविध कल्पवृक्ष शोभते।
पक्षी गणों के मंजु ख से मन को मोहते।।
देवों के भवन कूट वापियाँ अनेक हैं।
वैभव असंख्य औ सभी रचना विशेष हैं।।14।।

चारण मुनी सदा वहाँ करते विहार हैं।
एकांत में स्वतत्त्व का करते विचार हैं।।
जिनवंदना से पापपुंज को विनाशते।
शुद्धातमा के ध्यान से निज को प्रकाशते।।15।।

मैं भी सुमेरु पर्वतों की वंदना करूँ।
चैत्यालयों की बार बार अर्चना करूँ।।
जिन मूर्तियों को नित्य ही मैं चित्त में धरूँ।
निज ज्ञानमती पूर्ण करके सिद्धि को वरूँ।16।।

– घत्ता छंद –

जय जय श्री जिनवर, शाश्वत मंदिर, तुम गुण पार न कोई पावे।
जो तव गुण गावे, भक्ति बढ़ावे, सो भी जिनगुण निधि पावे।।17।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिअशीतिजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो महाजयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्यजन श्री पंचमेरु, व्रत करें नित चाव से।
फिर व्रतोद्योतन हित, महा पूजा करें बहु भाव से।।
वे पुण्यमय तीर्थेश हो, अभिषेक सुरगिरि पर लहें।
त्रय 'ज्ञानमति' चउज्ञान धर, फिर अंत में केवल लहें।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

– दोहा –

वृषभदेव से वीर तक, श्री चौबीस जिनेश।
नमूँ नमूँ उनको सदा, मिटे सकल भव क्लेश।।1।।

मूल संघ आचार्य श्री, कुंदकुंद गुरुदेव।
इनके अन्वय में हुआ, नंदिसंघ दुःख छेव।।2।।

बलात्कार गण भारती, गच्छ प्रसिद्ध महान।
इसमें सूरीश्वर हुए शांतिसिंधु गुणखान।।3।।

वीरसागराचार्य थे, उनके पट्टाधीश।
श्रमणी दीक्षा दे मुझे, किया कृतार्थ मुनीश।।4।।

शांति कुंथु अरनाथ की, जन्म भूमि जगतीर्थ।
कुरुजांगल शुभ देश में, हस्तिनागपुर तीर्थ।।5।।

तीन अधिक पच्चीस सौ, वीर अब्द शुभ मान।
माघ शुक्ल सप्तमि तिथी, रचना पूरण जान।।6।।

''ज्ञानमती'' मैं आर्यिका, व्रत उद्यापन हेतु।
पंचमेरु पूजा रची, भक्ती भाव समेत।।7।।

जो भवि नित पूजा करें, पढ़ें सुनें एकाग्र।
इंद्र चक्रि सुख भोग के, वे पहुँचे लोकाग्र।।8।।

यावत् जग में मेरु हैं, यावत् श्री जिनधर्म।
तावत् यह पूजा विधी, प्रगट करो शिववर्त्म।।9।।

इति शंभूयात्

मेरुपंक्ति व्रत विधि

जम्बूद्वीप का एक, धातकीखण्ड पूर्व दिशा का एक, धातकीखण्ड पश्चिम दिशा का एक, पुष्करार्ध पूर्व दिशा का एक और पुष्करार्ध पश्चिम दिशा का एक इस प्रकार कुल पाँच मेरुपर्वत हैं। प्रत्येक मेरुपर्वत पर भद्रशाल, नन्दन, सौमनस और पाण्डुक ये चार वन हैं। एक-एक वन में चार-चार चैत्यालय हैं। मेरुपंक्ति व्रत में वनों को लक्ष्य कर बेला और चैत्यालयों को लक्ष्य कर उपवास करने पड़ते हैं। इस प्रकार इस व्रत में पांचों मेरु संबंधी अस्सी चैत्यालयों के अस्सी उपवास और बीस वन सम्बन्धी बीस बेला करने पड़ते हैं तथा सौ स्थानों की सौ पारणाएँ होती हैं। इसमें दो सौ बीस दिन लगते हैं। व्रत, जम्बूद्वीप के मेरु से शुरू होता है। इसमें प्रथम ही भद्रशाल वन के चार चैत्यालयों के चार उपवास, चार पारणायें और वन सम्बन्धी एक बेला, एक पारणा होती है। फिर सौमनस वन के चार चैत्यालयों के चार उपवास, चार पारणाएँ और वन सम्बन्धी एक बेला, एक पारणा होती हैं। इसी क्रम से धातकीखण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम मेरु तथा पुष्करार्धद्वीप के पूर्व और पश्चिम मेरु सम्बन्धी उपवास, बेला और पारणाएँ होनी चाहियें। यह मेरुपंक्ति व्रत मेरुपर्वत पर महाभिषेक को प्राप्त कराता है अर्थात् इस व्रत का पालन करने वाला पुरुष तीर्थंकर होता है।

मेरुपंक्तिव्रत की समुच्चय जाप्य-

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धि-अशीतिजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

नोट-कोई-कोई एक-एक चैत्यालय सम्बन्धी एक-एक उपवास ऐसे अस्सी उपवास भी करते हैं। उसमें एकांतर और बेला का नियम नहीं रखते हैं। शक्ति होने से पूर्वोक्त विधि से करना चाहिये अन्यथा शक्ति अनुसार भी कर सकते हैं।

पंचमेरु की अस्सी जाप्य

विशेष-यदि कोई पंचमेरु पंक्ति व्रत करने में मात्र अस्सी उपवास करे तो सबसे पहले प्रथम मेरु के व्रत में क्रमशः इन सोलह जाप्यों को करें। ऐसे क्रम ही क्रम से आगे के चार मेरु सम्बन्धी जाप्यों को क्रम से करते हुये अस्सी चैत्यालय के अस्सी उपवास सम्बन्धी अस्सी जाप्य करें।

सुदर्शनमेरु सम्बन्धी सोलह व्रत की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्वदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तरदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

14. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्-जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

विजयमेरु सम्बन्धी 16 उपवास की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

3.ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थित-पूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-पश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-पूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

14. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-पश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

अचलमेरुसम्बन्धी 16 व्रत की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

14. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं धातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

मंदरमेरु सम्बन्धी 16 व्रत की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

14. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिण-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिम-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तर-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

विद्युन्मालीमेरु सम्बन्धी 16 व्रत की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्व-दिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थित-पश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थित-पूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थित-पश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिनंदनवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-पूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-पश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-पूर्वदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

14.ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-दक्षिणदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

15. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-पश्चिमदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थित-उत्तरदिक्जिनालयजिनबिंबेभ्यो नमः।

पंचमेरू विधान की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय श्री मेरुजिनं, स्वामी जय श्री मेरुजिनं।
ढाई द्वीपों में हैं-2, पंचमेरु अनुपम।।ॐ जय.।।

मेरु सुदर्शन प्रथम द्वीप के, मध्य विराज रहा।स्वामी.।
सोलह चैत्यालय से-2, स्वर्णिम राज रहा।।ॐ जय.।।1।।

पूर्वधातकी खण्ड द्वीप में, विजय मेरु शाश्वत।स्वामी.।
ऋषिगण वंदन करने जाते-2, पीते परमामृत।।ॐ जय.।।2।।

अपर धातकी अचलमेरु से, सुन्दर शोभ रहा।स्वामी.।
तीर्थंकर जन्माभिषेक भी-2, करते इन्द्र जहाँ।।ॐ जय.।।3।।

पुष्करार्ध के पूर्व अपर में, मेरू द्वय माने।स्वामी.।
मंदर विद्युन्माली-2, नामों से जाने।।ॐ जय.।।4।।

पंचमेरु के अस्सी, जिनमन्दिर शोभें।स्वामी.।
इक सौ अठ जिनप्रतिमा, सुर नर मन मोहें।।ॐ जय.।।5।।

जो जन श्रद्धा रुचि से, प्रभु आरति करते।स्वामी.।
वही ''चंदनामति'' क्रम से, भव आरत हरते।।ॐ जय.।।6।।

पंचमेरू का भजन

-आर्यिका चन्दनामती

श्री पंचमेरु का पाठ, करो सब ठाट बाट से प्राणी।
जिनभक्ती भक्ति निशानी।।
ढाई द्वीपों में पाँच मेरु,
जिनमें सबसे पहला सुमेरु।
सोलह चैत्यालय नमूँ शान्त सुखदानी,
जिनभक्ती मुक्ति निशानी।।1।।
प्रभू जन्म न्हवन करते गिरि पर,
निज परिकर सह सौधर्म इन्द्र।
शृंगार प्रभू का किया शची इन्द्राणी,
जिनभक्ती मुक्ति निशानी।।2।।
ऋषिगण जहँ विचरण करते हैं,
सिद्धों का सुमिरन करते हैं।
निज आत्मरमण कर सफल करें जिन्दगानी,
जिनभक्ती मुक्ति निशानी।।3।।
जो पंचमेरु वंदन करते,
अस्सी जिनगृह दर्शन करते।
वे पा लेते निर्वाण कहे जिनवाणी,
जिनभक्ती मुक्ति निशानी।।4।।
हम भी प्रभु का गुणगान करें,
भक्ती पियूष का पान करें।
भक्ती गंगा 'चंदनामति' कल्याणी,
जिनभक्ती मुक्ति निशानी।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
"चंदना" इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें "चन्दना"।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।5।।